*ॐ*

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्  विषय-हिन्दी

दिनांक—10/03/2021  अलन्कार(पुनरावृत्ति)

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

**एन सी इ आर टी पर आधारित**

शब्दालंकार -

जहां काव्य में शब्दों के प्रयोग वैशिष्ट्य से कविता में सौंदर्य और चमत्कार उत्पन्न होता है । वहां शब्दालंकार होता है ।

जैसे -‘ भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही ‘

इस उदाहरण में विशिष्ट व्यंजनों के प्रयोग से काव्य में सौंदर्य उत्पन्न हुआ है। यदि ‘ भूमि ‘ के बजाय उसका पर्यायवाची ‘ पृथ्वी ‘ , ‘ भूप ‘ के बजाय उसका पर्यायवाची ‘ राजा ‘ रख दे तो काव्य का सारा चमत्कार खत्म हो जाएगा।

शब्दालंकार के भेद

**1. अनुप्रास अलंकार**

वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास अलंकार कहते हैं.

तरनि -तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये |

कानन कठिन भयंकर भारी |
~~~~~~~~~~

2.यमक अलंकार - जब किसी काव्य पंक्ति में कोई शब्द दो या दो से अधिक बार आये और उसका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो तो वहाँ यमक अलंकार होता है ; जैसे -

**1. कनक - कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकाय |**

**या खाए बौराय मन ,या पाए बौराए ||**

तीन बेर खातीं ते वे तीन बेर खाती हैं |

3.श्लेष अलंकार - श्लेष का अर्थ है - चिपका | जहाँ एक शब्द से प्रसंगवश अनेक अर्थ निकलते हों अर्थात् जब वाक्य में एक शब्द केवल एक बार या एक से अधिक बार आए और उस शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलें तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है | जैसे -

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"

🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲